इकाई - II

5. बहादुर बित्तो

प्रश्न :

1. चित्र में क्या–क्या दिखायी दे रहा है?
2. लड़की क्या–क्या कर रही है? बताओ।
3. लड़की ने रेल रोकने का प्रयास क्यों किया होगा?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ पढ़ो। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित करो।
2. कठिन शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा करो।
3. कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़ो।

एक किसान था। उसकी बीवी का नाम था – बित्तो। एक दिन किसान ने बित्तो से कहा – सुबह जब मैं खेत में हल चला रहा था तो एक शेर ने आकर कहा – किसान-किसान! अपना बैल मुझे दे दे वरना मैं तुझे खा जाऊँगा।

बित्तो ने उससे पूछा – तूने क्या जवाब दिया?

किसान ने कहा – मैंने कहा, तू यहीं रुक, मैं घर जाकर अपनी गाय ले आता हूँ। अगर तू बैल खा लेगा तो हम लोग भूखों मर जाएँगे।

© NCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

यह सुनकर बित्तो को बहुत गुस्सा आया। उसने किसान को फटकारा– घर की गाय शेर को खिलाते तुझे शर्म नहीं आती? अगर गाय चली गई तो घर में न दूध, न लस्सी। बच्चे रोटी किस चीज़ के साथ खाएँगे?

बित्तो को एक तरकीब सूझी। उसने कहा – तुम फ़ौरन खेत में जाकर शेर से कहो कि मेरी बित्तो तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।

किसान डरता–डरता शेर के पास गया। उसने कहा – शेर राजा! हमारी गाय तो बड़ी मरियल है। उससे तुम्हारा क्या बनेगा! मेरी बीवी अभी तुम्हारे लिए एक मोटा–ताज़ा घोड़ा लेकर आ रही है।

बित्तो ने सिर पर एक बड़ा–सा पग्गड़ बाँधा और हाथ में दराँती लेकर

© SCERT not to be republished

घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा दौड़ाती वह खेत पर पहुँची और ज़ोर से चिल्लाई – अरे किसान! तू तो कहता था कि तूने चार शेरों को फाँस कर रखा है। यहाँ तो सिर्फ़ एक ही है। बाकी कहाँ गए? फिर वह घोड़े से उतरकर शेर की तरफ़ बढ़ी और कहने लगी – अच्छा, कोई बात नहीं, नाश्ते में एक ही शेर काफ़ी है।

इतना सुनना था कि शेर डर के मारे काँपने लगा और भाग खड़ा हुआ।

यह देखकर बित्तो बोली – देखा, इसे कहते हैं हिम्मत! तुम तो इतने डरपोक हो कि घर की गाय शेर के हवाले कर रहे थे।

उधर मारे भूख के शेर की आँतें छटपटा रही थीं। एक भेड़िए ने पूछा – महाराज, क्या मामला है? आप आज बहुत उदास दिखाई दे रहे हैं!

शेर ने कहा – कुछ न पूछो, आज मुश्किल से जान बची है। आज एक ऐसी राक्षसी से पाला पड़ गया जो रोज़ सुबह चार शेरों का नाश्ता करती है।

यह सुनकर भेड़िया बहुत हँसा। वह सुबह झाड़ी में छिपकर सारा तमाशा देख रहा था। उसने कहा – भोले बादशाह! वह तो बित्तो थी, जिसे आपने राक्षसी समझ लिया था। आप इस बार फिर कोशिश करके देखिए। अगर बैल आपके हाथ न आए तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।

बहुत कहने-सुनने पर शेर किसान के खेत में जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन उसने भेड़िए से कहा – तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ से बाँध लो।

दोनों जने पूँछ बाँधकर चल पड़े। उन्हें देखते ही किसान के होश-हवास गुम हो गए। वह डर से थर-थर काँपने लगा। लेकिन बित्तो बिल्कुल नहीं

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण
©SCERT not to be republished

घबराई। भेड़िए के पास जाकर उसने कहा – क्यों रे भेड़िए, तू तो अभी वादा करके गया था कि तू अपनी पूँछ से चार शेर बाँधकर लाएगा! लेकिन तू तो सिर्फ़ एक ही शेर लाया है! वह भी मरियल-सा! भला इसे खाकर मेरी भूख मिट सकती है? खैर, इस वक्त यही सही। इतना कहकर बित्तो आगे बढ़ी।

शेर के होश-हवास उड़ गए। उसने समझा कि भेड़िए ने उसके साथ धोखा किया है। वह फ़ौरन वहाँ से भागा। भेड़िया बहुत चीखा-चिल्लाया, लेकिन शेर ने एक न सुनी। तेज़ी से भागता चला गया।

किसान और बित्तो आराम से रहने लगे। उन्हें मालूम था कि अब शेर उनके खेत की तरफ़ फिर कभी नहीं आएगा।

© SCERT
not to be republished

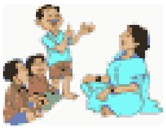

सुनिए–बोलिए

1. भेड़िए ने शेर को **भोले महाराज** क्यों कहा? क्या शेर सचमुच भोला था?
2. शेर ने भेड़िए की पूँछ के साथ अपनी पूँछ क्यों बाँध ली?
3. क्या शेर फिर कभी बित्तो के खेत की तरफ़ गया होगा? हाँ, तो क्यों? नहीं, तो क्यों?
4. बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसी लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

पढ़िए

1. किसान ने बित्तो से क्या कहा?

2. कहानी में तुमने दराँती का चित्र देखा। नीचे ऐसे ही कुछ और शब्द दिए गए हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखो।

कि	उ	स	बो	त	ल	क्ष	खा	ता	ज्ञ
सा	आ	म	रा	जा	ता	य	ना	ला	ख
न	री	छ	नू	प	था	जू	है	ब	र
सु	त	ली	थ	क	प	ता	न	चा	गो
प	शे	र	ल	रे	उ	ला	गा	र	श
चू	ह	स	च	ला	ड़ी	प	ज	ग	य
हा	ल	आ	पा	से	खा	ती	र	च	प
थ	थी	ती	र	छ	घ	रा	जू	ल	ब
नी	द	राँ	ती	ल	र	ब	हो	ती	ज
प	ग	ड़ी	ग	नी	दि	ख	ती	स	ती

© SCERT not to be republished

लिखिए

1. अगर तुम शेर की जगह होतीं तो क्या करतीं?

2. अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

3. **नीचे दिए गए शब्दों को सही तालिका में लिखो।**

किसान, बोतल, लता, कक्कू, केला, कलम, राजू, रानू, चूहा, नीना, शेर, जूता, चारपाई, पगड़ी, खरगोश, करेला, छलनी, बित्तो, घोड़ा, गौरैया, बाल्टी, पीपल, कोयल, नीम, किताब, दराँती

जानवर	चीज़ें	नाम

© SCERT not to be republished

शब्द भंडार

शेर जंगल पर राज करता था।

मेरा राज़ किसी से न कहना।

राज और राज़ को बोलकर देखो।

दोनों के बोलने में फ़र्क है न?

- कहानी में से ऐसे ही **ज़** पर लगे नुक्ते वाले शब्द ढूँढ़ो।

  ....

- अब अपने मन से सोचकर **ज़** पर लगे नुक्ते वाले पाँच शब्द लिखो।

  ....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

शेर ने बित्तो को राक्षसी समझ लिया। वह खेत में नहीं जाना चाहता था पर भेड़िए के समझाने पर वह राज़ी हो गया। सोचो, शेर और भेड़िए के बीच क्या बातचीत हुई होगी?

शेर – भेड़िए, तुम क्यों हँस रहे हो?

भेड़िया – महाराज, वह तो ....

शेर – नहीं नहीं। वह सचमुच राक्षसी थी।

भेड़िया – मैंने अपनी आँखों से देखा है महाराज। वह ....

....

शेर – ....

भेड़िया – ....

शेर – ठीक है ....।

© SCERT not to be republished

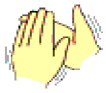

प्रशंसा

- अभी तक पाठ में तुमने पढ़ा कि बित्तो ने अपने साहस के बल पर किस तरह से शेर को मज़ा चखाया। अब तुम बित्तो की प्रशंसा करते हुए दस वाक्य लिखो।

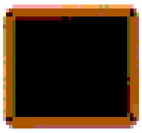

भाषा की बात

खाली जगह में क्या आएगा?

- मेरी छत पर <u>मोर</u> आया।
- मेरी छत पर <u>मोरनी</u> आई।

मोर–मोरनी की तरह नीचे लिखे शब्दों के भी रूप बदलो।

औरत	–	घोड़ा	– ....
शेर	–	मछुआरा	– ....
बच्चा	–	राजा	– ....

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (√)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता हूँ। भाव बता सकता हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता हूँ।		
5. पाठ के आधार पर चाँदवाली अम्मा पर छोटी कहानी लिख सकता हूँ		

© SCERT not to be republished

पढ़ो-आनंद लो

मूस की मज़दूरी

नागा लोककथा

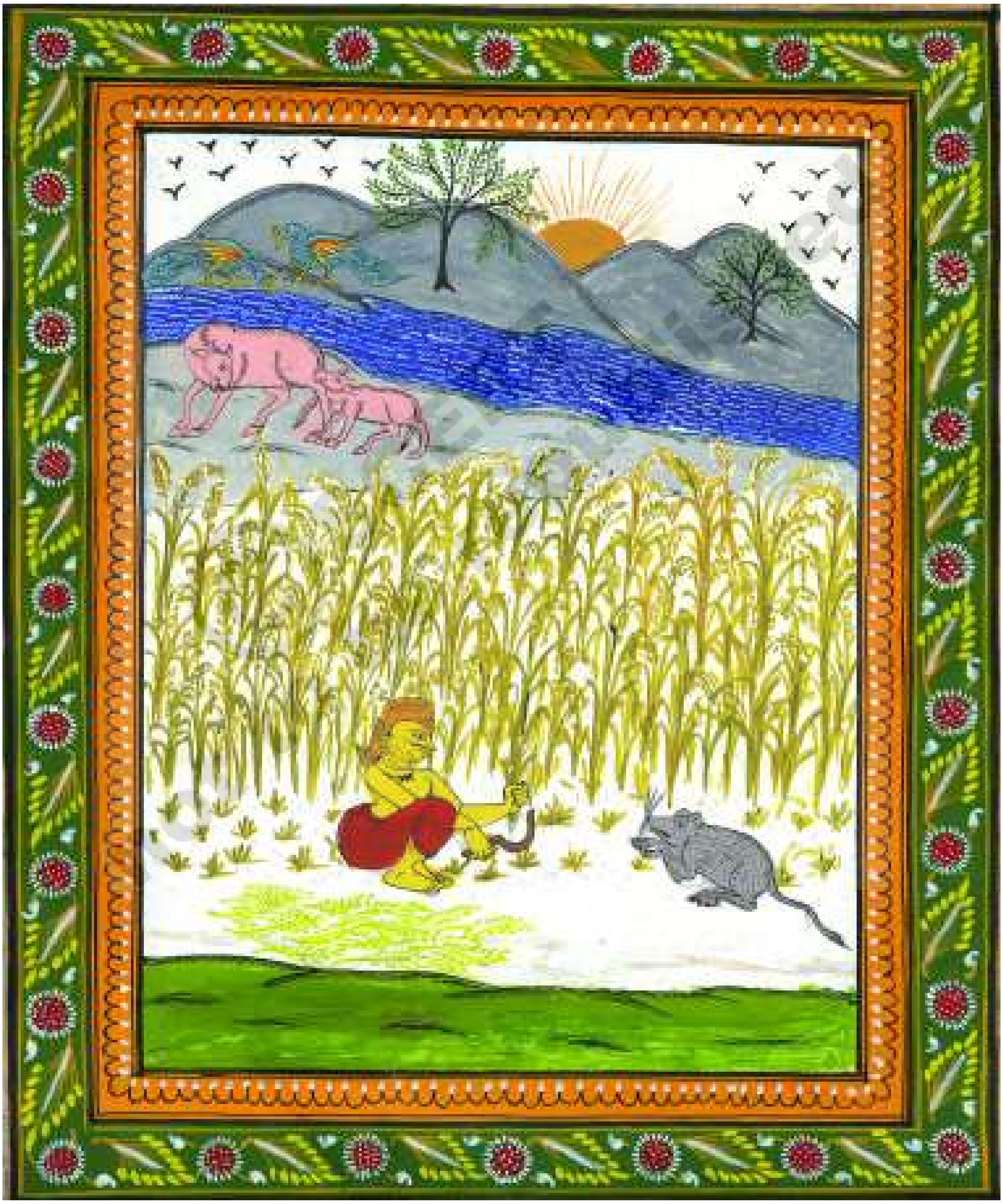

बहुत समय पहले की बात है। उस समय आदमी के पास धान नहीं था। सबसे पहले आदमी ने धान का पौधा एक पोखरी के बीच में देखा। धान की बालियाँ झूम-झूमकर जैसे आदमी को बुला रही थीं। पर गहरे पानी के कारण धान तक पहुँचना कठिन था।

आदमी सोचता हुआ खड़ा ही था कि वहीं पर एक मूस दिखलाई पड़ा। आदमी ने मूस को पास बुलाया और कहा –

मूस भाई, पोखरी के बीच में देखो उन धान की प्यारी बालियों को, झूम-झूम कर वे मुझे बुला रही हैं लेकिन पानी गहरा है। यदि तुम उन्हें हमारे लिए ला दो, तो हम तुम्हें मेहनताने का हिस्सा दे देंगे।

मूस को भला क्या एतराज़ था! वह सरसर तैर गया और बालियों को दाँतों से कुतर-कुतर कर किनारे पर लाने लगा। थोड़ी-ही देर में किनारे पर धान की बालियों का ढेर बन गया।

तब आदमी ने प्रसन्न होकर कहा – मूस भाई, अब इसमें से अपनी मज़दूरी का हिस्सा तुम स्वयँ ले लो।

पर मूस ने कहा – भाई मेरे, मैं ठहरा छोटा जीव। मेरा सिर भी है छोटा। अपना हिस्सा इस छोटे से सिर पर ढोकर कैसे ले जाऊँगा? इसलिए अच्छा तो यह होगा कि तुम यह पूरा धान अपने घर ले जाओ और मैं तुम्हारे घर पर ही आकर अपने हिस्से का थोड़ा धान खा लिया करूँगा।

आदमी ने ऐसा ही किया और तभी से मूस आदमी के घर धान खाता चला आ रहा है।

रामनंदन